

गुरु नानक – सबद ६९  
सोई मउला जिन जग मउलिआ हरिआ कीआ संसारे ॥  
राग सिरिराग, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, २४

सोई मउला जिन जग मउलिआ हरिआ कीआ संसारे ॥  
आब खाक जिन बंध रहाई धंन सिरजणहारे ॥ १ ॥  
मरणा मुला मरणा ॥  
भी करतारहु डरणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥  
ता तू मुला ता तू काजी जाणहि नाम खुदाई ॥  
जे बहुतेरा पड़िआ होवहि को रहै न भरीऐ पाई ॥ २ ॥  
सोई काजी जिन आप तजिआ इक नाम कीआ आधारे ॥  
है भी होसी जाइ न जासी सचा सिरजणहारे ॥ ३ ॥  
पंज वखत निवाज गुजारहि पड़हि कतेब कुराणा ॥  
नानक आखै गोर सदेई रहिओ पीणा खाणा ॥ ४ ॥ २८ ॥

**सारः**: भय और भक्ति साथ नहीं रह सकते। जब किसी चीज़ या व्यक्ति का डर मन में घर कर लेता है तब यह ऐसी बाधाएँ पैदा करता है जो एकता के मिलाप से दूर कर देते हैं। सच्ची भक्ति प्रेम से जन्म लेती है, भय अक्सर अस्तित्व के स्रोत के सार सर्वव्यापी ऊर्जा को गलत समझने से पैदा होता है। जैसे यह विश्वास करना कि निर्माता और उसकी रचना अलग हैं। आध्यात्मिक रूप से जागरूक होने का मतलब है सभी की एकता को पहचानना और बिना किसी डर के इस मिलाप को अपनाना।

सोई मउला जिन जग मउलिआ हरिआ कीआ संसारे ॥  
असली मालिक सर्वव्यापी शक्ति है जो सृष्टि में खिलने और फलने-फूलने के लिए रचना के रूप में ज़ाहिर होती है।

आब खाक जिन बंध रहाई धन सिरजणहारो ॥१॥

यह वही है जिसने पानी और मिट्टी को बाँधकर यह जगत बनाया है। इस सृष्टि के रचयिता की महिमा अद्भुत है। (१)

मरणा मुला मरणा ॥

मृत्यु सभी को आती है; धार्मिक पुजारी इस वास्तविकता का उपदेश देते हैं, लेकिन आंतरिक जागृति के बिना, वे आध्यात्मिक मृत्यु का सामना करते हैं।

भी करतारहु डरणा ॥१॥ रहाऊ ॥

क्योंकि वे, सर्वव्यापी शक्ति से डरते और भय पैदा करते हैं जो जीवन और मृत्यु का स्रोत है। (१)(विराम)

ता तू मुला ता तू काजी जाणहि नाम खुदाई ॥

धर्मज्ञानी या क़ाज़ी न्यायाधीश तब ही कहलाया जाएगा जब आत्म-चिंतन के माध्यम से सृष्टि की एकता का ज्ञानी होगा।

जे बहुतेरा पड़िआ होवहि को रहै न भरीऐ पाई ॥२॥

बहुत पढ़-लिखकर ज्ञान होने पर भी अगर किसी का आंतरिक मन अहंकार से भरा है तो उसे विद्वान् नहीं माना जा सकता। (२)

सोई काजी जिन आप तजिआ इक नाम कीआ आधारो ॥

क़ाज़ी की उपाधि के वही योग्य हैं जो स्वार्थ और अहंकार को अलग रख, एकता को अपने फैसलों के आधार के रूप में अपनाते हैं।

है भी होसी जाइ न जासी सचा सिरजणहारो ॥३॥

वह अब है, हमेशा रहेगा, कभी नहीं जाएगा। यही सर्वव्यापी शक्ति, सृष्टि के निर्माता की वास्तविकता है। (३)

ਪੰਜ ਵਖਤ ਨਿਵਾਜ ਗੁਜਾਰਹਿ ਪਡ਼ਹਿ ਕਤੇਬ ਕੁਰਾਣਾ ॥  
ਕੋਈ ਦਿਨ ਮੇਂ ਪਾਂਚ ਵਕਤ ਨਮਾਜ਼ ਪਢੇ ਔਰ ਕੁਰਾਨ (ਪਵਿਲ ਪੁਰਾਣੋਂ) ਕਾ ਪਾਠ ਕਰੋ।

ਨਾਨਕ ਆਖੈ ਗੇਰ ਸਦੇਈ ਰਹਿਓ ਪੀਣਾ ਖਾਣਾ ॥੪॥੨੮॥

ਨਾਨਕ ਕਹਤੇ ਹਨ ਕਿ ਜਬ ਮੌਤ ਆਏਗੀ ਔਰ ਕੱਭ ਬੁਲਾਏਗੀ ਤਥ ਸਾਰੇ ਦਿਖਾਵੇ ਔਰ ਸੁਖ-ਵਿਲਾਸ ਬੇਕਾਰ ਹੋ ਜਾਏਂਗੇ। (੪)(੨੮)

**ਤੱਤ:** ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਹਮੇਂ ਹਮਾਰੀ ਨਿਵਾਰਤਾ ਕੀ ਧਾਰਦ ਦਿਲਾਤੇ ਹਨ ਔਰ ਹਮੇਂ ਮੂਲ੍ਯ ਕੀ ਅਨਿਵਾਰਤਾ ਕੇ ਪ੍ਰਤਿ ਸਜਗ ਰਹਨੇ ਕਾ ਆਗਰਾ ਕਰਤੇ ਹਨ। ਵਹ ਇਸ ਸੰਦੇਸ਼ ਕੇ ਦ੍ਰਾਰਾ ਸਤਹੀ ਦਿਖਾਵੇ ਕੀ ਧਾਰਮਿਕ ਰਸਮਾਂ ਯਾ ਸਾਂਸਾਰਿਕ ਅਭਿਮਾਨ ਸੇ ਵਿਚਲਿਤ ਹੋਨੇ ਕੇ ਬਜਾਯ ਵਿਨਮ੍ਰਤਾ, ਆਤਮ-ਚਿੰਤਨ ਔਰ ਸਚੀ ਭਕਤਿ ਕਰਨੇ ਕਾ ਆਹਾਨ ਕਰਤੇ ਹਨ। ਦੁਨਿਆਵੀ ਸੁਖ- ਵਿਲਾਸ ਸੇ ਬੰਧੇ ਰਹਨੇ ਕੇ ਬਜਾਯ ਹਮੇਂ ਆਧਿਆਤਮਿਕ ਜਾਗ੍ਰਤਿ ਲਾਨੇ ਕੇ ਲਿਏ ਸਟੁਡੋਨਾਂ ਕਾ ਵਿਕਾਸ ਕਰਨਾ ਚਾਹਿਏ ਕਿ ਅੰਤ ਮੇਂ ਕੇਵਲ ਹਮਾਰੇ ਕਰਮ ਹੀ ਹਮਾਰੇ ਸਾਥ ਰਹੇਂਗੇ।

---

ਪਹਲਕਦਮੀ

Oneness In Diversity Research Foundation

ਵੇਬਸਾਈਟ: [OnenessInDiversity.com](http://OnenessInDiversity.com)

ਈਮੇਲ: onenessindiversityfoundation@gmail.com